भारत सरकार
संस्कृति मंत्रालय

लोक सभा
अतारांकित प्रश्न संख्या 2574
उत्तर देने की तारीख 17.03.2025

राजस्थान में भारतीय कला और संस्कृति का संवर्धन

2574. श्री बृजेन्द्र सिंह ओला :
श्रीमती महिमा कुमार मेवाड़ :
श्रीमती मंजू शर्मा:

क्या संस्कृति मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या सरकार इस बात से अवगत है कि झुंझुनू जिले सहित संपूर्ण राजस्थान राज्य भारतीय कला और सांस्कृतिक विरासत का एक महत्वपूर्ण स्थान है;

(ख) सरकार द्वारा विगत पांच वर्षों के दौरान भारतीय कला और संस्कृति, विशेषकर राजस्थान की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत को बढ़ावा देने हेतु उठाए गए/उठाए जाने वाले कदमों का ब्यौरा क्या है;

(ग) सरकार द्वारा विगत पांच वर्षों के दौरान राजस्थानी संस्कृति एवं राजस्थान के लोक कलाकारों सहित देश की विभिन्न संस्कृतियों को बढ़ावा देने हेतु उठाए गए कदमों का ब्यौरा क्या है;

(घ) क्या सरकार द्वारा सम्पूर्ण देश में राजस्थान के लोक गीतों और लोक नृत्यों को बढ़ावा दिया जा रहा है/बढ़ावा देने का विचार है और यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है; और

(ड.) क्या सरकार ने मेवाड़ में सांस्कृतिक विकास और परिरक्षण के लिए विशेष उपाय किए हैं और यदि हां, तो तत्संबधी ब्यौरा क्या है?

उत्तर

संस्कृति एवं पर्यटन मंत्री
(गजेन्द्र सिंह शेखावत)

क) से (ग): भारत सरकार ने राजस्थान राज्य सहित भारतीय कला और देश की सांस्कृतिक विरासत को संवर्धित करने के लिए सात क्षेत्रीय सांस्कृतिक केंद्र (जेडसीसी) स्थापित किए हैं जिनके मुख्यालय पटियाला (पंजाब), नागपुर (महाराष्ट्र), उदयपुर (राजस्थान), प्रयागराज

(उत्तर प्रदेश), कोलकाता (पश्चिम बंगाल), दीमापुर (नागालैंड) और तंजावुर (तमिलनाडु) में स्थित हैं।

पश्चिम क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र (डब्ल्यूजेडसीसी), उदयपुर (राजस्थान) द्वारा राजस्थान राज्य (जिला झुंझुनू) सहित अपने सदस्य राज्यों की सांस्कृतिक आवश्यकताओं को पूरा किया जाता है। राजस्थान उत्तर क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र (एनजेडसीसी), पटियाला और उत्तर मध्य क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र (एनसीजेडसीसी), प्रयागराज का भी सदस्य राज्य है। ये जेडसीसी राजस्थान राज्य सहित अपने सदस्य राज्यों में विभिन्न सांस्कृतिक कार्यकलापों और कार्यक्रमों का नियमित आधार पर आयोजन करते हैं।

विगत पांच वर्षों के दौरान डब्ल्यूजेडसीसी, उदयपुर; एनजेडसीसी, पटियाला और एनसीजेडसीसी, प्रयागराज को राजस्थान सहित इनके सदस्य राज्यों में विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रमों और कार्यकलापों के आयोजन हेतु जारी सहायता अनुदान निम्नानुसार हैं:

(रुपये लाख में)

क्र. सं.	**वर्ष**	**डब्ल्यूजेडसीसी, उदयपुर**	**एनजेडसीसी पटियाला**	**एनसीजेडसीसी, प्रयागराज**
i.	2019-20	923.32	785.27	864.39
ii.	2020-21	705.00	613.41	446.44
iii.	2021-22	653.92	530.76	984.70
iv.	2022-23	1452.49	276.51	301.51
v.	2023-24	1280.10	1067.79	3553.24

विगत 5 वर्षों के दौरान राजस्थान में आयोजित कार्यकलापों की संख्या और डब्ल्यूजेडसीसी, एनजेडसीसी और एनसीजेडसीसी द्वारा राजस्थान के लाभान्वित लोक कलाकारों की संख्या निम्नानुसार है:

क्र. सं.	**वर्ष**	**राजस्थान में आयोजित सांस्कृतिक कार्यकलाप/कार्यक्रमों की संख्या**	**राजस्थान के लाभान्वित लोक कलाकारों की संख्या**	**इन लोक कलाकारों को प्रदान की गई राशि (रुपए लाख में)**
i.	2019-20	125	2495	174.04
ii.	2020-21	45	758	55.38
iii.	2021-22	77	1548	94.69
iv.	2022-23	142	3097	252.10
v.	2023-24	128	2368	223.26

संस्कृति मंत्रालय द्वारा गुरु-शिष्य परम्परा (रेपर्टरी अनुदान) स्कीम संचालित की जाती है जिसके अंतर्गत लोक कलाकारों और मंच कला की सभी विधाओं जैसे कि संगीत समूहों, नृत्य समूहों, बाल रंगमंच सहित रंगमंच समूहों, संगीत मंडलियों आदि को वित्तीय सहायता प्रदान की जाती है। इस स्कीम के अंतर्गत, कलाकार की आयु के आधार पर गुरु (समूह का प्रमुख) के लिए सहायता राशि 15,000/- रुपये प्रति माह है और शिष्य के लिए यह राशि 2,000-10,000/- रुपये प्रति माह है।

संस्कृति मंत्रालय द्वारा सांस्कृतिक समारोह एवं निर्माण अनुदान स्कीम (सीएफपीजी) भी संचालित की जाती है, जिसके तहत संगोष्ठियों, सम्मेलनों, अनुसंधान, कार्यशालाओं, महोत्सवों, प्रदर्शनियों, विचारगोष्ठियों, नृत्य, नाट्य-रंगमंच, संगीत आदि के निर्माण के लिए संगठनों को वित्तीय सहायता प्रदान की जाती है। विगत तीन वर्षों के दौरान इस स्कीम के तहत राजस्थान में स्थित संगठनों को जारी अनुदान राशि निम्नानुसार है:

क्र. सं.	वर्ष	संगठनों की संख्या	राशि
i.	2019-20	34	40.70 लाख रुपये
ii.	2020-21	38	28.31 लाख रुपये
iii.	2021-22	33	63.81 लाख रुपये
iv.	2022-23	48	81.16 लाख रुपये
v.	2023-24	57	46.28 लाख रुपये

वस्त्र मंत्रालय, भारत सरकार के अंतर्गत विकास आयुक्त (हस्तशिल्प) का कार्यालय ''राष्ट्रीय हस्तशिल्प विकास कार्यक्रम (एनएचडीपी)'' और ''समग्र हस्तशिल्प क्लस्टर विकास स्कीम (सीएचसीडीएस)'' का कार्यान्वयन करता है जो विपणन सहायता, कौशल विकास, क्लस्टर विकास, उत्पादक कंपनियों के गठन, कारीगरों को प्रत्यक्ष लाभ, अवसंरचनात्मक और तकनीकी सहायता, अनुसंधान और विकास सहायता आदि के माध्यम से संपूर्ण सहायता भी प्रदान करती है जिसमें राजस्थान राज्य सहित देश भर के कारीगरों को लाभान्वित करते हुए पारंपरिक शिल्पों का परिरक्षण और संवर्धन शामिल है।

(घ): डब्ल्यूजेडसीसी, एनजेडसीसी और एनसीजेडसीसी द्वारा राजस्थान के लोक नृत्यों जैसे कि घूमर, कालबेलिया, कच्छी घोड़ी, कठपुतली, चकरी, भवाई आदि और राजस्थान की लोक गायन शैलियाँ जैसे लंगा और मंगणियार, पाबूजी की फड़, वीर तेजाजी गायन, रिखिया गायन को बढ़ावा दिया जाता है।

डब्ल्यूजेडसीसी द्वारा पश्चिमी राजस्थान के घुमंतुओं से संबंधित रिखिया गायन पर एक वृत्तचित्र फिल्म भी बनाई गई है।

(ड.): डब्ल्यूजेडसीसी उदयपुर के संग्रहालय में तत्कालीन मेवाड़ की भव्य जीवन शैली को प्रदर्शित किया गया है, जहां नियमित आधार पर शाम को "धरोहर" नामक शो आयोजित किया जाता है।

डब्ल्यूजेडसीसी द्वारा शिल्पग्राम उत्सव, शिल्पदर्शन, रंगशाला, ऋतु वसंत और मल्हार के दौरान मेवाड़ चित्रकला कार्यशाला- चित्रांकन का भी आयोजन किया जाता है।